

राम ॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥

॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥

राम

राम

२३६

॥ पदराग धमाल ॥

राम

मेरे प्रितम प्यारे कब मिले हो

राम

when will I meet my beloved

राम

मेरे प्रीतम प्यारे कब मिले हो ॥ जे मेरा धुर खावंद हे वो सोय ॥टेर॥

राम

राम

My beloved, when will I meet you? who is my husband since the beginning? when will he meet me?

राम

राम

प्रित पुकार पुकार पुकारे ॥ ब्रहन रही बिल लाय ॥

राम

राम

रात दिवस कळ ना पडे हो ॥ उडत पांख बिन जाय ॥१॥

राम

राम

Love has arisen only for him. The love calls out to him again and again, Pining and crying in separation, wailing and groaning. It finds no peace day or night, fluttering like a bird without wings, to reach its Master.

राम

राम

सुध बुध सबे भूल गई सारी ॥ अक अकल आ मांह ॥

राम

राम

रामही राम पुकारे निस दिन ॥ अक पीव की चाह ॥२॥

राम

राम

Wisdom and intellect have all been forgotten. Forgetting wisdom, one becomes senseless, and forgetting intellect, one becomes mindless. Only this much sense remains that day and night, one keeps chanting the name Ram, Ram. And there is a longing within to meet the only beloved, the Lord.

राम

राम

अन जळ तजा निंद नहिं आवे ॥ सूक रहयो तन ज्योय ॥

राम

राम

कहे सुखदेव इण जगत में हो ॥ धिग जनम हे मोय ॥३॥

राम

राम

The intake of food and water is abandoned, the sleep has also vanished, and this entire body is drying up. Satguru Sukhramji Maharaj said, taking birth in this world is disgrace for me

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम